आगमों के प्रथम प्रवक्ता आर्य सुधर्मा

विदेह प्रदेश के अन्तर्गत कोल्लाग सन्निवेश नाम के गाँव में अधिकतर मध्यम श्रेणी के कर्मकाण्डी ब्राह्मण परिवार रहते हैं। गाँव की पूर्व दिशा में धम्मिल नामक धनाढ्य विद्वान् ब्राह्मण की हवेली थी। धम्मिल प्रतिदिन प्रातः नदी-तट पर जाकर सूर्य-पूजा करते थे। धम्मिल की पत्नी का नाम था भद्दिला।

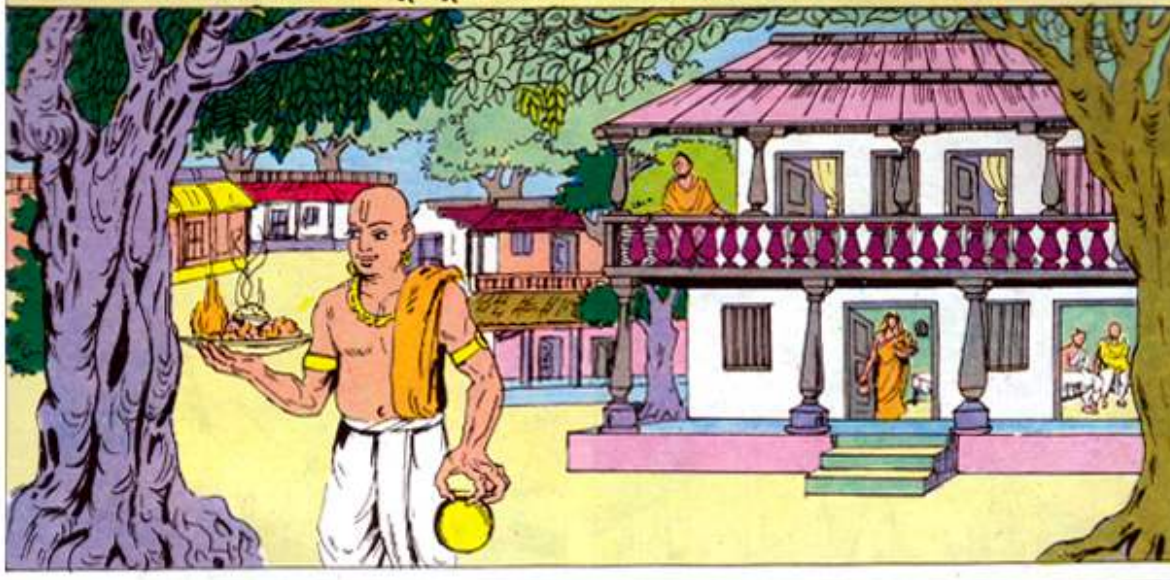

एक दिन भद्दिला रात को सोई थी। स्वप्न में माता सरस्वती ने दर्शन दिया। भद्दिला भावविह्वल हो हाथ जोड़कर बोली—

माता सरस्वती ने आशीर्वाद दिया–

तुम शीघ्र ही एक ऐसे पुत्र की माँ बनोगी, जो जिनवाणी[1] रूप महासागर को अपनी प्रज्ञा[2] रूपी भुजाओं से पार करेगा।

प्रातः भद्दिला ने स्वप्न की घटना अपने पति को बताते हुए पूछा–

स्वामी ! जिनवाणी रूप महासागर का क्या अभिप्राय है?

जिस प्रकार ऋग्वेद, उपनिषद् आदि शास्त्र वेदवाणी कहलाते हैं। उसी प्रकार तीर्थंकर पार्श्वनाथ की आत्म-विद्या के शास्त्र जिनवाणी कहलाते हैं।

तो क्या हमारा पुत्र वेदवाणी की जगह जिनवाणी पढ़ेगा?

देवी ! सच तो यह है कि वेदवाणी में मुख्य रूप में कर्मकाण्ड का ही विधान है। जबकि जिनवाणी को पढ़े बिना आत्म-विद्या का सम्पूर्ण ज्ञान नहीं हो सकता।

प्रसन्नता से भद्दिला का चेहरा खिल उठा–

तब तो हमारा पुत्र महान् आत्मज्ञानी होगा न?

1. जिनवाणी–वीतराग तीर्थंकरों के उपदेश 2. सूक्ष्म बुद्धि

समय आने पर माता ने एक सुन्दर तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया।[1]

धम्मिल ने पुत्र का जन्मोत्सव मनाया। मित्रजनों को स्वप्न की बात बताते हुए कहा–

माता सरस्वती के संकेतानुसार यह ब्राह्मण और श्रमण दोनों धर्म परम्पराओं का सेतु[2] रूप बनेगा। इसलिए इसका नाम सुधर्मा रखना चाहता हूँ।

हर्ष,

हर्ष,

बड़ा होने पर सुधर्मा को विद्याध्ययन के लिए गुरुकुल भेजा गया।

1. विक्रम पूर्व ५५०। ईस्वी पूर्व ६०७ भगवान महावीर के जन्म से आठ वर्ष पूर्व। 2. जोड़ने वाला पुल